Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh

कक्षा - दसवीं
दिनांक - 08 अप्रैल, 2024

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 10 'दो कलाकार' (कहानी) लेखिका - मन्नू भण्डारी

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या - 64 पर दी गई दसवीं कहानी 'दो कलाकार का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'दो कलाकार' पढ़ने जा रहे हैं। आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक की पृष्ठ संख्या-64 निकाल कर रख लें साथ ही उत्तर - पुस्तिका और एक कलम भी अपने पास रख लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को विराम देकर तीन मिनट के अंतराल में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं।

'दो कलाकार' कहानी मन्नू भण्डारी द्वारा रचित है। यह कहानी कला के वास्तविक अर्थ की ओर संकेत करती है कि कलाकार का कार्य समाज के रंगों को चित्रित करना ही नहीं वरन् दीन-दुखियों के जीवन में खुशियों के रंग भरना भी है। इस कहानी के द्वारा लेखिका का

उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि सच्ची कला और सच्चे कलाकार क्या हैं। चित्रकला, मूर्तिकला आदि कलाएँ हैं। इन कलाओं के द्वारा कलाकार बेजान, निर्जीव चित्रों एवं मूर्तियों को सजीव की तरह बनाते हैं परन्तु बेजान हो रहे सजीव लोगों की तरफ़ ध्यान नहीं देते। यदि हम मौत से लड़ते लोगों को सहारा दें, दुखियों की सहायता करें तो हम सच्चे कलाकार हो सकते हैं। ऐसी ही कलाकार हमें इस कहानी में अरुणा के रूप में दिखाई देती है। इस प्रकार गरीब और बेसहाश लोगों की बेरंग जिन्दगी में अपनी सेवा से रंग भरना ही कहानीकार का उद्देश्य है।

बच्चो ! इस कहानी में मुख्यत: दो ही पात्र हैं अरुणा और चित्रा। आइए अब इन दोनों पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर लेते हैं :-

पात्र - परिचय

1. अरुणा - अरुणा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है। वह चित्रा के साथ कॉलेज में पढ़ती है और होस्टल के एक ही कमरे में दोनों रहती हैं। दोनों छह साल से साथ में रह रही हैं। वह संस्कारों से परोपकारी तथा कर्म के प्रति समर्पित है। वह समाज - सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है। अपनी पढ़ाई से समय निकालकर वह बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ाती है। वह न केवल समाज सेविका है बल्कि अपने संबंधों के प्रति भी पूर्णत: जागरूक है। वह अपनी सखी चित्रा का बहुत ध्यान रखती है। अरुणा के हृदय में दूसरों के लिए इतना दर्द है कि वह हर परिस्थिति में उनकी सहायता करना चाहती है। वह भिखारिन के रोते - चीखते दोनों बच्चों को सँभालती है और उन्हें अपने पास रख कर भरण - पोषण कर उन्हें नया जीवन देती है।

इस प्रकार अरुणा के हृदय में सच्ची संवेदना है। दया, करुणा, मैत्री, परोपकार तथा सहानुभूति से भरा

उसका हृदय कर्म के प्रति अनुप्रेरित करता रहता है।
चित्रा - चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान है। वह चित्रकला की छात्रा है और महत्त्वकांक्षी है। उसके जीवन का उद्देश्य है कि वह एक विश्व प्रसिद्ध चित्रकार बने। चित्रकला की उसमें इतनी लगन है कि वह हर समय रंगों में ही डूबी रहती है, ऐसे में उसे दीन-दुनिया तक की खबर नहीं रहती। वह चित्रकला को इतना महत्त्व देती है कि हर एक घटना में अपनी कला के लिए आइडिया की तलाश में रहती है। इस कला के लिए वह अपनी सखी अरुणा से बहस भी करती है। वह 'समाज सेवा' की बजाय 'कला' को बेहतर मानती है। कला की साधना से ही वह देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करती है। अखबार की सुर्खियों में होती है। उसके चित्रों की प्रदर्शनी चर्चा का विषय बनती है। वह प्रथम पुरस्कार जीतती है और सम्मान भी प्राप्त करती है। कहानी के अंत में वह विश्व प्रसिद्ध चित्रकार तो बन गई परन्तु अरुणा के आगे वह नतमस्तक हो गई, क्योंकि सच्ची कला की परख अब उसे हो गई थी।

बच्चो! अब कहानी को आरंभ से विस्तारपूर्वक समझने का प्रयास करते हैं। आपका ध्यान इस ओर ही केन्द्रित होना चाहिए।

चित्रा और अरुणा होस्टल के एक कमरे में रहती हैं। दोनों में घनिष्ठ मित्रता है। परन्तु दोनों का कार्य क्षेत्र व सोच अलग-अलग है। चित्रा को चित्रकारी में निपुणता प्राप्त थी। वह जीवन की प्रत्येक घटना को अपने चित्रों में उतार लेती थी। वह स्वयं को चित्रकारी में व्यस्त रखा करती थी। एक दिन चित्रा ने उसी समय चित्र को पूरा किया तो वह उस चित्र को अरुणा को दिखाने के लिए बेचैन हो रही थी। इसलिए उसने अरुणा को गहरी नींद से जगाया परन्तु अरुणा की चित्रकला में अरुचि थी इसलिए उसने खिजलाहट

प्रकट करते हुए विरोध जताया कि इसे दिखाने के लिए उसने नींद खराब कर दी। अपने चित्र की प्रशंसा करते हुए चित्रा ने कहा कि इस चित्र के लिए उसे पहला इनाम अवश्य मिलेगा। अरुणा ने जब चित्र को देखा तो उसे स्पष्ट नहीं हो रहा था कि आखिर चित्रा ने किसका चित्र बनाया है। उसने चित्रा से कहा कि तुझे कितनी बार कहा है कि चित्र बनाकर उसका नाम भी लिख दिया कर ताकि मुझे समझने में परेशानी न हो वरना तू बनाएगी हाथी और मैं समझूँगी उल्लू। अरुणा चित्र को एक टक देखने के बाद भी समझ नहीं पा रही थी कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है। अरुणा ने उसके द्वारा बनाए गए चित्र को चनचक्कर के नाम संबोधित किया। उस चित्र में सड़क, आदमी, ट्राम, बस मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे थे। मानो सबको खिड़की पकाकर रख दी हो। चित्र को देखकर अरुणा को कुछ स्पष्ट नहीं हो रहा था कि आखिर चित्रा का इस चित्र को बनाने का क्या उद्देश्य है इस चित्र के द्वारा वह क्या संदेश देना चाह रही है? अरुणा के समझ न आने पर चित्रा ने उसे बताया कि यह चित्र आज की दुनिया में ~~कन्फ्यूजन~~ अर्थात् भ्रम का प्रतीक है। लेकिन अरुणा को वह चित्र चित्रा के दिमाग के कन्फ्यूजन का प्रतीक नज़र आ रहा था। अरुणा को चित्रा की कला निरर्थक लगती है। उसका मानना है कि प्रतीकात्मक एवं निर्जीव चित्र को बनाना केवल अपना समय व्यर्थ करना है। यह कहकर अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गई। अरुणा त्यागमय एवं परोपकारी प्रवृत्ति की लड़की थी। वह अपने जीवन में गरीबों की सेवा को अधिक महत्त्व देती थी। मुँह धोकर जब अरुणा लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे बच्चे बस्ती के चौकीदारों, नौकरों तथा चपरासियों के थे जिन्हें

अरुणा पढ़ाती थी। वे बच्चे पढ़ने के लिए अरुणा की प्रतीक्षा कर रहे थे। चित्रा अरुणा का उड़ाते हुए कहती है कि ये क्या बेदर पाल रखे हैं तूने। फिर हँसते हुए चित्रा बोली कि एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को बताएँगे कि हमारी एक मित्र समाज-सेविका थी जो गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाया करती थी। इस तरह की बातें करके चित्रा अरुणा का मज़ाक उड़ाया करती थी।

एक दिन चार बजते ही जब कॉलेज की सारी लड़कियाँ लौट आई लेकिन अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए अरुणा की प्रतीक्षा कर रही थी। अरुणा को कॉलेज से लौटने में देर हो गई थी जब वह आई तो दोनों ने चाय पी। चाय पीते-पीते चित्रा ने अरुणा को बताया कि उसके पिता जी का पत्र आया है। उन्होंने लिखा है कि मैं (चित्रा) कोर्स समाप्त होने के बाद विदेश जा सकती हूँ चित्रा अपने पिता की इकलौती संतान थी। उसके पिता उसके हर कार्य में उसका सहयोग करते थे एवं उसकी हर इच्छा पूरी करते थे। लेकिन अरुणा को तो चित्रा की कला निरर्थक लगती है। उसका मानना है कि चित्रों को बनाने में समय बेकार करने से अच्छा है जीवित प्राणियों का कुछ भला किया जाए। वह अरुणा से कहती है कि कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती? तेरे पास सामर्थ्य है, और साधन भी है। इस प्रकार चित्रा और अरुणा में कला और जीवन को लेकर लंबी-चौड़ी बहस होती रहती थीं। अरुणा का मानना था कि चित्रा चौबीस घंटे रंग और तूलिकाओं में ही डूबी रहती है। समाज के निचले वर्ग के निर्धन, असहाय तथा शोषित लोगों की सहायता करके वह अपना जीवन बेहतर बना सकती है इसलिए उसे चित्र बनाने की बजाय उन लोगों की सहायता करनी चाहिए। ऐसा करने से वे लोग तुम्हें आशीष देंगे।

बच्चो! हमने पृष्ठ संख्या 64 एवं 65 को विस्तार

से समझ लिया है। अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोक देंगे और उस अंतराल में आप उन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. चिन्ना ने सोती हुई अरुणा को क्यों उठा दिया?

प्रश्न 2. अरुणा ने चिन्ना द्वारा बनाए गए चित्र पर विरोध क्यों प्रकट किया?

प्रश्न 3. अरुणा ने चिन्ना को चित्र पर क्या लिखने को कहा?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सरलता से लिख लिए होंगे। अब मैं आपको उन्हीं प्रश्नों के उत्तर बताने जा रही हूँ जो इस प्रकार हैं:-

उत्तर 1. चिन्ना को चित्रकला में दक्षता प्राप्त थी। वह स्वयं को चित्रकारी में ही व्यस्त रखती थी। चिन्ना, अरुणा को अपना बनाया चित्र दिखाना चाह रही थी। चिन्ना ने वह चित्र उसी समय पूरा किया था। वह उस चित्र को अरुणा को दिखाने के लिए बेचैन हो रही थी। इसलिए उसने सोती हुई अरुणा को उठा दिया।

उत्तर 2. अरुणा सो रही थी और चिन्ना ने अपने चित्र को दिखाने के लिए अरुणा की नींद खराब कर दी थी इसलिए उसने चिन्ना द्वारा बनाए चित्र पर विरोध प्रकट किया।

उत्तर 3. अरुणा ने चिन्ना को उसके द्वारा बनाए गए चित्र पर नाम लिखने को कहा क्योंकि चिन्ना द्वारा बनाए गए चित्र से स्पष्ट पता नहीं चल पा रहा था कि आखिर चित्र किसका बनाया गया था? इसलिए अरुणा ने चिन्ना को चित्र पर नाम लिखने के लिए कहा।

बच्चो! आज हम अपने इस पाठ को यहीं विराम देते हैं। आशा करती हूँ कि आज पढ़ाए इस पाठ को आपने रुचि से सुना एवं समझा होगा। आप इस पाठ

की पृष्ठ संख्या 64 एवं 65 को दो-तीन बार अवश्य पढ़ेंगे एवं पूर्णता से समझने का प्रयास करेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

"अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?"

प्रश्न (क) 'अरे, यह क्या?'-कथन का वक्ता और श्रोता कौन हैं? उपर्युक्त कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ख) चित्र को चारों ओर घुमाते हुए वक्ता ने श्रोता को चित्र के संबंध में क्या सुझाव दिया?

प्रश्न (ग) 'खिचड़ी पकाकर' और 'घनचक्कर' शब्दों का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि इनका प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है और क्यों?

प्रश्न (घ) श्रोता ने अपने चित्र को किसका प्रतीक बताया? वक्ता ने उसकी खिल्ली किस प्रकार उड़ाई?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]